

विभक्तिश्लोकाः

[इस पाठ में मूल रूप से संस्कृत के प्रसिद्ध नीतिश्लोक संकलित हैं किन्तु इन श्लोकों की एक विशिष्टता ध्यान देने योग्य है। इनमें क्रमशः प्रथमा से लेकर सप्तमी तक की विभक्तियाँ मुख्य रूप से प्रयुक्त हैं। प्रथम श्लोक में प्रथमा विभक्ति, द्वितीय श्लोक में द्वितीया, तृतीय श्लोक में तृतीय इत्यादि। इसका यह अर्थ नहीं कि उन श्लोकों में अन्य विभक्तियाँ नहीं हैं, अन्यत्र के लिए तो उनका प्रयोग होना ही था किन्तु प्रधानता एक-एक श्लोक में एक-एक विभक्ति को दी गयी है। यह मनोरञ्जक प्रयोग है जो छात्रों को कण्ठाय रत्नना चाहिए।]



उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥१॥

विनयो वंशमाख्याति, देशमाख्याति भाषितम् ।

सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम् ॥२॥

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुर्गास्तुरङ्गैः ।

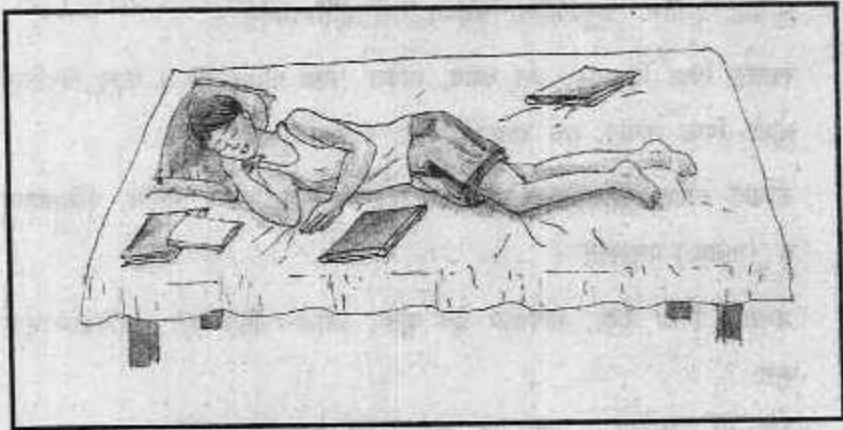
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समानशीलव्यसनेषु संख्यम् ॥3॥

विद्या विवादाय धनं भदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।

खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥4॥

क्रोधात् भवति संमोहः समोहात् स्मृतिविभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥5॥



अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥6॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।

साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ॥7॥

## अन्वयः

1. यत्र उद्यमः, साहसं, धैर्यं, बुद्धिः, शक्तिः पराक्रमः एते षड् वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् (भवति)।
2. विनयः वंशम् आख्याति, भाषितं देशम् आख्याति, सम्भ्रमः स्नेहम् आख्याति, वपुः भोजनम् आख्याति ।
3. मृगाः मृगैः संगम् अनुव्रजन्ति, गावः गोभिः, तुरंगाः तुरंगैः अनुव्रजन्ति, मूर्खैः मूर्खैः, सुधियः सुधीभिः अनुव्रजन्ति, सख्यम् समानशीलव्यसनेषु ।
4. खलस्य विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय । एतद् विपरीतम् साधोः विद्या ज्ञानाय, धनं दानाय, शक्तिः रक्षणाय (भवति) ।
5. क्रोधात् संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः भवति, बुद्धिनाशात् च (मानवः) प्रणश्यति ।
6. अलसस्य विद्या कुतः, अविद्यस्य धनं कुतः, अधनस्य मित्रं कुतः, अमित्रस्य सुखं कुतः ?
7. शैले-शैले माणिक्यं न, गजे-गजे मौक्तिकं न, सर्वत्र साधवः न हि, वने-वने चन्दनं न भवति ।

## शब्दार्थाः

उद्यमः = परिश्रम

धैर्यम् = धैर्यं, संतोष, धीरज

पराक्रमः = पराक्रम

|                 |   |                  |
|-----------------|---|------------------|
| षडेते (षड्+एते) | = | ये छः            |
| वर्तन्ते        | = | रहते हैं         |
| सहायकृत्        | = | सहायता करने वाले |
| विनयः           | = | नम्रता, विनय     |
| वंशमाख्याति     | = | वंश को बताती है  |

(वंशम् + आख्याति)

देशमाख्याति (देशम् + आख्याति) = देश को बताती है

|                |   |                            |
|----------------|---|----------------------------|
| भाषितम्        | = | भाषण, बोली, वाणी           |
| सम्भ्रमः       | = | हाव-भाव                    |
| स्नेहमाख्याति  | = | प्रेम को बताती है          |
| वपुराख्याति    | = | शरीर को बताती है           |
| मृगाः          | = | हिरण (बहुवचन)              |
| संगमनुव्रजन्ति | = | साथ अनुसरण करते हैं        |
| मूर्वाश्च      | = | और मूर्ख                   |
| मूर्खैः        | = | मूर्खों के साथ             |
| सुधियः         | = | बुद्धिमान                  |
| समानशील        | = | समान आचरण और आदत वालों में |
| सख्यम्         | = | मित्रता                    |

|                   |   |                          |
|-------------------|---|--------------------------|
| विवादाय           | = | विवाद/झगड़ा के लिए       |
| मदाय              | = | घमंड के लिए              |
| परेषाम्           | = | दूसरों के                |
| परिपीडनाय         | = | सताने के लिए             |
| खलस्य             | = | दुष्ट की                 |
| साधोर्विपरीतमेतद् | = | इसके विपरीत साधु की      |
| ज्ञानाय           | = | ज्ञान के लिए             |
| दानाय             | = | दान के लिए               |
| रक्षणाय           | = | रक्षा के लिए             |
| संगोहः            | = | अज्ञान                   |
| स्मृतिविभ्रमः     | = | स्मृति का भ्रमित होना    |
| स्मृतिभ्रंशाद्    | = | स्मरण शक्ति नष्ट होने से |
| प्रणश्यति         | = | नष्ट हो जाता है          |
| अलसस्य            | = | आलसी का/की               |
| माणिक्यम्         | = | माणिक्य                  |
| मौक्तिकम्         | = | मोती                     |

सन्धि - विच्छेदः / पदविच्छेदः

|                       |   |  |
|-----------------------|---|--|
| वंशमाख्याति           | = | वंशम् + आख्याति                          |
| देशमाख्याति           | = | देशम् + आख्याति                          |
| स्नेहमाख्याति         | = | स्नेहम् + आख्याति                        |
| वपुराख्याति           | = | वपुः + आख्याति (विसर्गसन्धिः)            |
| मूर्वाश्च             | = | मूर्वाः + च (विसर्गसन्धिः)               |
| षहेते                 | = | षट् + एते                                |
| गावश्च                | = | गावः + च (विसर्गसन्धिः)                  |
| गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः | = | गोभिः + तुरगाः + तुरङ्गैः (विसर्गसन्धिः) |
| साधोर्विपरीतमेतद्     | = | साधोः + विपरीतम् + एतत् (विसर्गसन्धिः)   |

प्रकृति - प्रत्यय - विभागः

|             |   |   |
|-------------|---|---|
| अनुव्रजन्ति | = | अनु + $\sqrt{\text{व्रज}}$ + प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्, |
| प्रणश्यति   | = | प्र + $\sqrt{\text{श}}$ + प्रथमपुरुषः, एकवचनम्      |
| आख्याति     | = | आ + $\sqrt{\text{ख्या}}$ + प्रथमपुरुषः, एकवचनम्     |

अभ्यासः

मौखिकः

1. एकपदेन उत्तरं वदत-

(क) विनयः किमाख्याति ?

(ख) भाषितं किमाख्याति ?

(ग) सम्भ्रमः किमाख्याति ?

(घ) वपुः किमाख्याति ?

(ङ) स्वलस्य विद्या किं करोति ?

2. श्लोकं श्लोकाशं वा वदत-

(क) विद्या विवादाय धनं मदाय,

शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।

(ख) अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

लिखितः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) कस्य धनं मदाय भवति ?

(ख) साधोः विद्या किमर्थं भवति ?

(ग) साधोः शक्तिः किमर्था भवति ?

(घ) कस्मात् स्मृतिविभ्रमः भवति ?

(ङ) विनयः किमाख्याति ?

(च) वपुः किमाख्याति ?

2. अधोलिखितानि रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) शैले-शैले \_\_\_\_\_ गौवित्तकं \_\_\_\_\_ ।

\_\_\_\_\_ सर्वत्र, चन्दनं न \_\_\_\_\_ ॥

(ख) \_\_\_\_\_ संगोहः समोहात् \_\_\_\_\_ ।

स्मृतिभ्रंशाद् \_\_\_\_\_ प्रणश्यति ॥

3. सुमेलनं कुरुत-

'क'

'ख'

(i) देशमाख्याति

(ज) भोजनम्

(ii) वपुराख्याति

(आ) भाषितम्

(iii) स्नेहमाख्याति

(इ) सम्भ्रमः

(iv) वंशमाख्याति

(ई) संगोहः

(v) क्रोधात्

(उ) मानवः प्रणश्यति

(vi) बुद्धिनाशात्

(उफ) विनयः



4. संधि-विच्छेदं / पदविच्छेदं कुरुत -

(क) मूर्खाश्च = \_\_\_\_\_ + \_\_\_\_\_ ।

(ख) देशमाख्याति = \_\_\_\_\_ + \_\_\_\_\_ ।

(ग) स्नेहमाख्याति = \_\_\_\_\_ + \_\_\_\_\_ ।

(घ) वपुराख्याति = \_\_\_\_\_ + \_\_\_\_\_ ।

(ङ) वंशमाख्याति = \_\_\_\_\_ + \_\_\_\_\_ ।

5. उदाहरणानुसारं लिखत रेखाङ्कितपदे का विभक्ति प्रयुक्ता

यथा - सः विद्यालयं गच्छति । द्वितीया विभक्ति ।

(क) अग्नये स्वाहा । \_\_\_\_\_

(ख) वपुः भोजनम् आख्याति । \_\_\_\_\_

(ग) अलसस्य विद्या कुतः । \_\_\_\_\_

(घ) खलस्य विद्या विवादाय । \_\_\_\_\_

(ङ) सः अश्वत् पतति । \_\_\_\_\_

(च) बालस्य मुखे सरस्वती निवसति । \_\_\_\_\_

6. निम्नलिखितानाम् अव्ययानां वाक्ये प्रयोगं कुरुत -

यत्र, तत्र, च, सर्वत्र, अपि, किम् ।

7. देवः कदा सहायकः अस्ति ?

## योग्यता-विस्तारः

संस्कृत भाषा में सात विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियों का प्रयोग वाक्य-रचना के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कभी-कभी मनोरंजन के लिए अथवा अनायास ही कुछ श्लोक ऐसे बन जाते हैं जिनमें किसी एक विभक्ति के प्रयोग को प्रमुखता दी जाती है। महाकाव्यों में ऐसे प्रयोग बहुधा मिलते हैं। जैसे किसी देवता को नमस्कार करना हो तो एक ही श्लोक में चतुर्थी विभक्ति के बहुत से ऐसे पद रखे जाते हैं जो विशेषण-विशेष्य के रूप में हों। जैसे-

“नमः सर्वविदे तस्मै व्यासाय कविदेधसे ।”

उस श्लोक में अन्य विभक्तियाँ केवल वाक्य-सम्बन्ध के निर्वाह के लिए रहती हैं किन्तु प्रमुखता एक ही विभक्ति को दी जाती है। सातों विभक्तियों से सम्बद्ध सात पद्य इस पाठ में दिये गये हैं। इनका महत्त्व नीतिश्लोक के रूप में ही है। इसलिए ये सभी मुक्तक (पृथक्-पृथक्) हैं।

वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड (सर्ग 15) में अशोकवनिका में जब हनुमान् सीता को देखते हैं तो दस से अधिक पद्यों में इसी प्रकार द्वितीया विभक्ति वाले शब्द आते हैं जो सीता के विशेषण या उपमान के रूप में हैं। कुछ श्लोक देखें -

अश्रुपूर्णमुखीं दीनां कृशामनशनेन च ।

शोकध्यानपरां दीनां नित्यं दुःखपरायणाम् ॥

सुखार्हा दुःखसंतप्तां व्यसनानामकोविदाम् ।

तां विलोक्य विशालाक्षीमधिकं मलिनां कृशाम् ।

तर्कयामास सीतेति कारणैरुपपादिभिः ॥

♦♦♦